

बरसाने में

ब्रज में वैसे तो एक-से-एक बढ़कर महावन, ब्रह्माण्डघाट, गोवर्धन, कामवन, नन्दगांव आदि स्थान हैं, कुज्ज हैं, सरोवर हैं; परन्तु बरसाने के सम्बन्ध में तो यहाँ के वे भोले-भाले ब्रजवासी जो सरोवरों में मुँह लगाकर पानी पी लेते हैं, रसिया गा-गाकर नाचते हैं--

“जो रस बरस रह्यो बरसाने, सो रस तीन लोक में नायँ ?”

“मीठी लागत बरसाने की गलियाँ,

जहँ विहरत राधा की अलियाँ ।”

वहाँ के सीधे-साधे सरल प्रकृति के लोगों को देखकर श्री स्वामीजी बहुत प्रसन्न हो गये । तब वह गांव बहुत ही छोटा-सा था । मन्दिर भी एक छोटे से चबूतरे के समान था । एक पुजारी सेवापूजा करके चला जाता था । बाँस की लकड़ियों के किवाड़ थे । मानों श्रीवृन्दावनाधीश्वरी ने अपना समस्त ऐश्वर्य छिपा रखा हो । उस एकान्त स्थान में टीले के ऊपर हरी-भरी वृक्षावली से ढके हुए छोटे से मन्दिर में श्रीस्वामीजी जाते और भावावेश में छः छः घण्टे मग्न रहते । बाहर की सुधि-बुधि सब भूल जाती । वे कभी लीला-चिन्तन में तन्मय हो जाते और कभी श्रीवृन्दावनेश्वरी से विनय करते ।”

“हे कृपानिधि ! मैं दीन हूँ, आर्त हूँ, भीत हूँ, भूखी हूँ, बलहीन हूँ, परन्तु तुम्हारी शरण में आयी हुई हूँ । आप कृपा

करके श्रीपार्थिविचन्द्र के चरणों में मुझे परा-प्रीतिका दान कीजिये, क्योंकि मेरे लिए वही परम सुख है, परमानन्द है ।

उस प्रमोदविपिन में जिसमें शुक-शुकी, कोकिल, मोर, चकोर कलरव करते हैं श्रीपार्थिवचन्द्र स्वच्छन्द भाव से अहर्निश प्यार से भरी रुचि से रोचित रहकर आनन्द क्रीड़ा में संलग्न रहें और मेरा हृदय उनके श्रीचरणकमलों में लोट-पोट हुआ करे ।

हे देवि ! श्रीपार्थिविचन्द्र के स्नान में, मृगमदादि विलेपन में, देवार्चन में, बीहड़वन में, केलि-शयन में, विनोदवार्ता में, उनकी सब लीलाओं में उनके ललित-कलित चरणकमलों में मैं अपना हृदय लुटाती फिखूं ।

हे स्निग्धे, मुग्धे शशिमुखि स्वामिनी श्रीराधे ! प्राणों की स्वामिनी ! मेरी रक्षा करो ! इस बच्ची को परम सुखप्रदा परा-प्रीति श्रीपार्थिविचन्द्र के प्रति प्रदान करो ।

आनन्दिनी भूनन्दिनी के श्रीचरणकमलों की मुझे जूती बना दो । गरीबिश्रीखण्डि का सर्व आनन्द श्रीमैथिलीचन्द्र ही हों ।

श्रीस्वामीजी जिस समय ब्रज में विराजमान थे उस समय मीरपुर में रहनेवाले भक्तों का एक दिव्य चमत्कार का अनुभव होता था । बात यह थी कि मीरपुर में श्रीस्वामीजी का एक अपना निजी मन्दिर है । उसमें श्रीअवधेश्वरी मिथिलेशकुमारी

श्रीजूमहाराज की मूर्ति विराजमान थी । उस मन्दिर की सब सेवा श्रीस्वामीजी अपने हाथों से ही करते थे । वहाँ की झाड़ू तक वे स्वयं ही देते थे । उस मन्दिर में जाने की आज्ञा किसी के लिए भी नहीं थी । यदि कभी किसी प्रेमी को मन्दिर का दर्शन कराते तो निष्कामता की प्रतिज्ञा लेनेपर । मस्तक झुकाने को भी मना कर देते थे और कहते कि हमारे श्रीमैथिलिचन्द्रजी को आशीर्वाद करो-“जुग-जुग जियो श्रीमैथिलिस्वामिनि ! अचल हों तुम्हारे सुहाग भाग ।”

जिस समय श्रीस्वामीजी मीरपुर से कहीं बाहर चले जाते थे- जैसे ब्रज में ही आये, तब भी उस मन्दिर से अचानक ही प्रातःकाल सितारपर मधुर संगीत सुनायी पड़ता था । जिसे सुनकर भक्तमण्डली आश्चर्यचकित हो जाती थी । एक प्रेमी को तो खिड़की के रास्ते प्रतिदिन श्रीस्वामीजी का दर्शन भी प्राप्त होता था ।